

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
Central Board of Secondary Education, Delhi

(परीक्षार्थी भन्ने) To be filled in by the candidate.

4/1

ASSE 2011

5011 Call ☒ X

1974 Subj: Hindi B

परीक्षा का दिन : १४ अप्रैल

Day & Date: Examination Monday 14/3/2011

[illegible]

4744

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

1. (i) ग) छात्र - छात्राओं द्वारा रचित होती है

(ii) ग) शेषों का उतार - चढ़ाव

(iii) घ) शिक्षागत विशिष्टताओं की

(iv) घ) विद्यालय - पत्रिका

v) ग) विद्यालय की साधन - सुविधाओं की सीमाएँ

2. (i) ग) आफू दिन पेंदा होने वाली समस्याएँ

(ii) ख) इनके सामने परिवार में ही निबटा दिया जाते हैं

(iii) क) आपसी विचार - विमर्श और समझौते का

(iv) घ) बात बढ़ जाना

✓) घ) जनता अशिक्षित, निर्धन और समस्याग्रस्त है

3 i) घ) पराधीनता को हटाया ✓

ii) ख) भारतवर्ष स्वतंत्र हमारा ✓

iii) क) पराधीनता से मुक्ति ✓

iv) घ) आज़ादी मिलने के बाद ✓

v) घ) स्वतंत्रता का गीत ✓

4 i) क) भारतीय युवा को ✓

ii) घ) समय को बदलते हुए ✓

iii) ख) परेशानियों को दूर करने का ✓

iv) क) नया विश्व का निर्माण करना चाहिए ✓

v) ख) उन्माही वीर

5 i) ग) क्रिया - विशेषण खण्ड 29

ii) घ) जल से भरी रहने वाली नदी

iii) ङ) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिङ्ग, भाववाचन

iv) ~~ख~~ ङ) सर्वनाम, पुरुषवाचक, ^{उत्तम} ~~अव्यय~~ पुल्लिङ्ग, बहुवचन

6 i) क) संयुक्त वाक्य

ii) ख) वह किताब जो मैंने उसे दी थी, वापस आ गई।

iii) ख) वह बाज़ार गया और फल खरीद लाया।

iv) ग) ज्योंही शिक्षक कक्षा से निकले, छात्रों ने खेलना शुरू कर दिया।

iii) क) अग्नि + आचार

iv) क) चरणामृत

v) ग) द्वारका का अधीश

vi) ख) पीताम्बर

vii) घ) पैरों पर खड़ा होना

viii) घ) हाथ कंगन को आरतना करना

ix) ग) मना कर देना

x) घ) थोड़ी सी प्रार्थना पर समझ होता है

9 i) क) लाल फूलों का गुच्छा ले जाइए।

ii) ग) हमने उसे देखा

iii) घ) मेरे को क्यों नहीं बताया ?

iv) छ) कृपया आप यहाँ से चले जाइए।

10 i) क) जीवन जीने का खण्ड ग

ii) ख) उन्हें पुर करना चाहिए

iii) क) मतभेद कम हों

iv) घ) दूसरों को सफल करते हुए स्वयं सफल हो

v) ग) जो दूसरों के लिए प्राण भी दे सकें

॥ क) 'येन की देन' पाठ में चाय पीने के बाद लेखक ने एक अद्भुत परिवर्तन महसूस किया। चुस्कियों में चाय पीते पीते उन्हें महसूस हुआ कि उनके दिमाग की स्फूर्ति धीमी हो रही थी। फिर धीरे धीरे यह गति बंद हो गई। लेखक ने इतनी शांति महसूस की कि उन्हें चायदानी के खदबदाने के आवाज के साथ साथ सन्नाटा तक मुनाई देने लगा। उनके मन से भूतकाल और भविष्य के सारे विचार उड़ गए। वेह केवल वर्तमान में जी रहे थे और वह वर्तमान क्षण उन्हें अनंतकाल जितना विस्तृत लगा।

॥ ख) 'गिरगिट कहानी' में इंस्पेक्टर ओचुमेत्सोव ने कुल चार बार अपनी बात बदली। पहले तो उन्होंने युक्रीन को धजाता दिलाने की बात कही, परंतु जब युक्रीन योव्दिरीन ने कहा कि वह कुत्ता शायद जनरल सिगात्सोव का है, तब ओचुमेत्सोव ने सारा दोरा युक्रीन पर डाँटकर कहा कि उसकी उठाली कोले पर गड़ गड़ होगा और धरजाली पाने हेतु इसने यह कुत्ते के साथे मड़ना चाहा होगा। फिर जब योव्दिरीन कहता है कि कुत्ता शायद जनरल स्नाइव का नहीं हो सकता, तब ओचुमेत्सोव फिर से बात उलटकर बदलता

हैं कि शायद यह कुत्ता आवारा है। वह यूक्रिन को
न्याय दिलाने की बात करता है। फिर जब मीड में से
कोई बताता है कि कुत्ता जनरल साहब का है, तो
ओचुमेत्वाव फिर पलटकर जाता है और यूक्रिन को
दोषी ठहराता है। जब कि जनरल साहब का वाच्यी रहता
है कि कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, तब कुत्ता
ओचुमेत्वाव की नज़र से फिर से आवारा हो जाता है।
अंत में जब पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब
के भाई का है, तब सारा दोष वापिस यूक्रिन पर
आ जाता है। इस प्रकार ओचुमेत्वाव अपनी बात
बदलता है।

निद्रा फाजली द्वारा रचित 'अब कहाँ दूसरों के दुख
में दुखी होने वाले पाठ से मनुष्य और अन्य
प्राणियों के अवलंबित्व रिश्ते और स्वभावों पर
प्रकाश डाला है। साथ ही प्रकृति से हो रही गड़-
बड़ को दर्शाया गया है।
पाठ में बताया गया है कि लेखक के माँ अबालीयस
में एक बड़ा मकान था। मकान के दान्तान में दो
रोशनदान थे जहाँ कबूतरों के हाक जोड़े जाते थे।

अंडे दिए थे। राक दित राक बिल्ली ने उचककर दो में
से राक अंडा तोड़ा। यह देखकर लेखक की माँ को
दुख हुआ। उन्होंने स्टूल पर चढ़कर दूसरा अंडा बचाने
के कोशिश की परंतु वह अंडा उन्हीं के हाथों से
गिरकर टूट गया। बूतलों की आँखों में दुख देखकर
लेखक की माँ को बहुत दुख हुआ। अतः खुदा से इस
शक्तियों को मुजाफ़ी कराने हेतु उन्होंने प्रार्थना किया।
इसके दिन भर रोती रही। उन्होंने दिन भर कुछ खाया-
पिया नहीं, बालक रोज़ा रखा। उन्होंने वे कुरआन पढ़-
पढ़कर खुदा से मुजाफ़ी माँगती रही। इस प्रकार
उन्होंने प्रार्थना किया।

13. क) व्यवहारवादी लोगों की यह विशेषताओं बताई गई है कि वे हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यो से आगे भी जाते हैं। स्वयं ऊपर उठने के लिए दूसरों को नीचे धकेलने से नहीं शिश्कते। अंत में वे समाज को ही गिराते हैं।

लोग
ख) कुछ ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्व की बात है।

ग) आदर्शवादी लोग कभी अपने आदर्शों से समझौता नहीं करते। अतः समाज के पास जो भी शक्ति स्रोत है (जैसे-सत्य, अहिंसा, आदि), वे सभी आदर्शवादी लोगों को ही देते हैं। आदर्शवादी लोग जब ऊपर चढ़ते हैं, तब अपने साथ औरों को भी ऊपर ले चलते हैं। अतः वे समाज का उत्थान करते हैं। इसी ओर, व्यवहारवादी लोग केवल समाज का पतन करते हैं।

14. क) बिहारी जी कहते हैं कि नायक - नायिका द्वार के अन्य-
 सदस्यों के साथ अपने भवन में बैठे हैं। मुँह खोले
 बगैर वे नयन तैनों से ही बातें करते हैं। नायक
 नायिका को प्रेक्ष इशारों द्वारा प्रेम का इजहार करता है।
 नायिका इससे खीझती है। मना कर देती है। नायिका के
 मना करने के दंश से नायक रीझता है। नायिका
 खीझ जाती है। फिर दोनों के नयन मिलते हैं, और
 नायिका का चेहरा खिल उठता है। नायिका को लज्जा
 आती है। अतः आँखों के माध्यम से ही आँखों में से ही,
 नायक नायिका बात कर लेते हैं।

ख) 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता के माध्यम से
 कविता ने ईश्वर उनके प्रियतम ईश्वर का पथ
 आकलित करने का साधन है कि ईश्वर का उनके
 दिल तक पहुँचने में कितनी आसानी है।

ग) 'आत्मप्राण' कविता हमें आत्म-निर्भरता और आत्म-
 रक्षा का संदेश देती है। कविता में लेखक ईश्वर से
 कष्टों का निवारण करने की प्रार्थना नहीं करते बल्कि
 उन कष्टों को सहन करने हेतु शक्ति, निर्भयता, आस्था,

स्वास्थ्य और साहस की कामना करते हैं। व इस
 संकटों पर स्वयं विजय पाना चाहते हैं। उसी प्रकार
 हमें भी ईश्वर से हमारा भार लघु करने की
 कामना नहीं करनी चाहिए। बल्कि हमें ईश्वर पर
 अडिग आस्था की, बल-पौरुष की, साहस की
 निर्भयता की, आत्मनिश्चयता की और स्वास्थ्य की
 कामना करनी चाहिए। हमें कड़ी मेहनत करनी
 चाहिए तथा विपरीत परिस्थितियों पर स्वयं ही जय
 पाकर लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। अतः यह कविता
 हमें आत्मप्राण और मेहनत का संदेश देती है।

15.

'सपनों' के से दिन 'कहानी' में लेखक को रूकल जानने से और नई कक्षा में पढ़ने से कोई खशी नहीं मिलती थी। इसके मुख्य कारण - था अध्यापकों के मात्र-पीट का भय। अध्यापक काम न करने पर 1200 पीटें थे। वे बच्चों को हरफनमौला समझकर उन्हें बहुत काम देते और अगर उन्हीं अपेक्षाओं पर बच्चे खरे नहीं आते तो उनकी बहुत पीटाई करते। वे अगली कक्षा में भी काठिन्य पढ़ाई और पाठ्यक्रम को देखकर भी भयभीत हो जाते थे।

उन्हें स्काउटिंग के वक्त स्कूल अच्छा लगता। जब वर्दी पहने तथा दो रंगी कमाल गले में बांधे, बच्चे हाथ में नीले-पीले झंडे पकड़कर 'पीपी', प्रेमचंद जी के 'हिरोल' या 'वन टू थ्री' के अनुसार झंडे ऊपर-नीचे, दाहिने-बाएँ धुमाते तब लेखक को बड़ा मजा आता। परेड में भाग करना, लफट या राइड देना करना, लेखक का अच्छा लगता था।

भले ही लोपी क

लोपी का परिवार बीसवीं सदी में प्रवेश कर चुका था परंतु उनके ख़ासतः पारंपारिक और पुराने थे। वे न तो दूसरे हास के लोगो को पसंद करते थे न उनका साथ। जब लोपी ने अपनी माँ को 'अम्मी' कहकर पुकारा तो सब धर के धर रह गए। उन्हें उनकी परंपराओं की दीवार टूटती नज़र आई और सभी अच्युत आग बबूली हो गए। लोपी को उनका साँ की मार - पीट और उसकी बाँही की लोखी बतते झेलनी पड़ी। जब धरवालों को समझा कि लोपी ने यह शब्द शक्ति से नहीं कहा, तब लोपी को उसके घर जाने को मना कर दिया गया।

खण्ड - घ

बेरोजगारी और आज का युवा वर्ग

17.

महाविद्यालय और विश्वविद्यालय से डिग्री पाकर लौकरी की तलाश में दर-दर भटकते नवयुवकों के चेहरे पर निराशा और चिंता के आवेष्टन सामान्य बात हो गई है। ये बेरोजगार युवक रात को करवटें खाते हैं और आँसुओं के खारेपन को पीकर समाज को अपनी लीन व्यथा सुनाते हैं। आज बेरोजगारी भारत की सबसे बड़ी आर्थिक समस्याओं में से है। बेरोजगारी की स्थिति है जब कोई योग्य और काम करने के लिए इच्छुक लोग वर्तमान परिस्थितियों में तथा मिलने वाले पैसे के अनुसार काम करवा पाएँ और उन्हें काम मिले। बेरोजगार व्यक्ति अपने स्वभाव के योग्यता के अनुसार लौकरी ढूँढ़ता है, पर निराशा रह जाता है। बेरोजगारी से युवकों में निराशा और जेड़माली फैलती है। वे हताशा हो जाते हैं। गरीबी और कमाई बढ़ने के कारण देश की नुकसान होता है। आत्महत्या, चोरी और

ऐसे व्यक्ति अपने परिवार का पालन - पोषण नहीं कर
 सकते जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव
 पड़ता है। जहाँ माक और कई भारतीय नौकरी की
 तलाश में दूर रहे हैं, वहीं विदेश से लोगों को
 बड़े कामों के लिए बुलाया जाता है। मत बेरोज़गारी
 की समस्या घातक है। इसके मुख्य कारण हैं जनसंख्या
 आवर्द्ध और बेरोज़गारी - बड़ी पर बढ़ती निर्भरता। शरीकी,
 और शिक्षा की अयोग्यता के कारण भी बेरोज़गारी
 को बढ़ावा देते हैं। बेरोज़गारी दूर करने के लिए
 सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं जैसे बैंकों का
 राष्ट्रीयकरण, सड़क निर्माण, आदि। इस दिशा में
 और कदम उठाए जा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में
 नए प्रकार के कारखाने शुरू करके बेरोज़गारी पर बढ़ती
 निर्भरता को कम किया जा सकता है। सड़क निर्माण,
 वित्त विभाग, धरणी के विकास में अन्य
 प्रयत्न किस प्रकार के कामों में रोज़गार दिया जा सकता है।
 लोगों को शिक्षा का महत्व बताकर विश्वविद्यालय तक
 बच्चों को सिखाने की सुविधा करना चाहिए।
 बढ़ती जनसंख्या पर ब्रेक लगाने तथा सभी लोगों

का प्रयास करना चाहिए कि सरकारी स्कीमों का फायदा
धनी और भ्रष्टाचारी लोगों को नहीं, बल्कि दीन लोगों
को ही हो।

अंत में कहा जा सकता है कि

वैरोलनारी की समस्या है मुश्किल
पर हम हैं इसका सामना करने के काबिल।
भ्रष्टाचार और जनसंख्या वृद्धि रोकें,
वैरोलनारी घटाओ, मानव निर्माण करो।

18.

परीक्षा भवन,
परीक्षा केंद्र,
अ.व.क. नगर

दिनांक:- 11 मार्च 2017

सेवा में
आधिकारी महोदय,
परिवहन विभाग,
महानगर पालिका,
अ.व.क. नगर

विषय:- सिद्धार्थनगर क्षेत्र में नई बस सेवा अन्तर्गत
कराने हेतु विनया प्रार्थना।

माननीय महोदय,
में अ.व.क. नगर के सिद्धार्थनगर क्षेत्र की निवासी हूँ।
इस इलाके में कई छात्र एवं अध्यापक रहते हैं। इनमें

से ज्यादा लोग शहर के केंद्रीय विद्यालय जाते हैं।
 परंतु यहाँ से विद्यालय तक जाने की सीधी
 बस सेवा इ उपलब्ध न होने के कारण परिवहन का
 मुश्किल बन जाती है। बस बदलना, पैदल चलना या
 ट्रेन बदलना आसान न होने के कारण यहाँ के लोग
 स्कूल बन सुविधा के लिए आकुल हैं।

अतः मैं आपसे मुलाह - शाम चलने वाली बस
 सुविधा उपलब्ध कराने की विनती करती हूँ जिससे
 हमें हमारा समय और व्यय बच सके तथा जो केंद्रीय
 विद्यालय तक सीधा आना जाय। आशा है आप
 यह प्रस्न पूरा करेंगे।

भवनीया,
 क. ख. ग.

भवनीया
 भवनीया

